अध्याय तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.0. प्रस्तावना –

शोधकर्ता ने प्रथम अध्याय में शोध परिचय दिया गया है। जिसमें योजना चालू करने का कारण, बच्चों के शिक्षा के लिए संविधान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रावधान तथा सर्व शिक्षा अभियान की विविध योजनाओं का संक्षिप्त विवरण एवं मध्याह्न भोजन के कार्यक्रम का परिचय और अध्ययन की आवश्यकता को बताया गया है।

दूसरे अध्याय में शोधकर्ता ने अनुसंधान संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है। जिसमें शोध संबंधित साहित्य का महत्व, उसका लाभ एवं विविध शोध संबंधित साहित्य का आंकलन किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता अपने शोधकार्य के लिए शोध प्रक्रिया का विवरण किया गया है।

3.1. अनुसंधान अभिकल्प :–

अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रेसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबन्ध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये, क्योंकि इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है न्यादर्श जितने अधिक सुद्रढ होते शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय व शुद्ध होंगे। न्यादर्श के चयन के पश्चात उपकरणों एवं तकनिक का चयन भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि, इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाना है इसके बाद एक उपयुक्त सांख्यिकी विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करके निष्कर्ष निकाला जाता है।

शोधकर्ता ने शोध अभिकल्प में निम्नलिखित अवयवों का विवरण किय गया है।

- शोध विधि
- न्यादर्श का प्रारूप तथा विधियाँ

- शोध उपकरणों का चयन
- प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया।

3.2. शोध प्रविधि :-

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोधकार्य में वर्णात्मक विधि का प्रयोग करके सर्वे विधि के साथ मध्याह्न भोजन योजना के उद्देश्यों के उपलब्धि को देखने के लिए प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों, मध्याह्न भोजन लेने वाले छात्रों, मध्याह्न भोजन को बनाने वाले संचालक तथा मध्याह्न भोजन योजना के निगरानी करने वाले विविध सदस्यों को साक्षात्कार करने के लिए आंशिक संरचित साक्षात्कार/अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

3.2.1 जनसंख्या :-

शोधकर्ता प्रस्तुत शोध कार्य में गुजरात राज्य के 26 जिलों में से अमरेली जिला लिया गया है। अमरेली जिले के कुल 11 तहसील में से राजुला तहसील को लिया गया है। जिसमें राजुला तहसील में कुल 96 स्कूल है, इसमें से पांच स्कूल चुनी गई हैं।

3.2.2 न्यादर्श की प्रविधि :-

न्यादर्श चयन करने के लिए अनेक विधियों का शोधकार्य में उपयोग किया जाता है। जिसमें सम्भाव्य न्यादर्श और असम्भाव्य न्यादर्श ऐसे दो प्रकार है, इसमें से प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने असम्भाव्य न्यादर्श की सोद्देशीय न्यादर्श (Purposive sample) विधि का प्रयोग किया गया है।

3.2.3 न्यादर्श चयन की विधि :-

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श की विधि में सोद्देशीय न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने गुजरात राज्य के 26 जिले है। इसमें अमरेली जिले को लिया गया है। जिनमें 11 तहसील में से

राजुला तहसील को चुना गया है। इस तहसील के 96 प्राथमिक स्कूलों में से 05 प्राथमिक स्कूलों को चुना गया हैं।

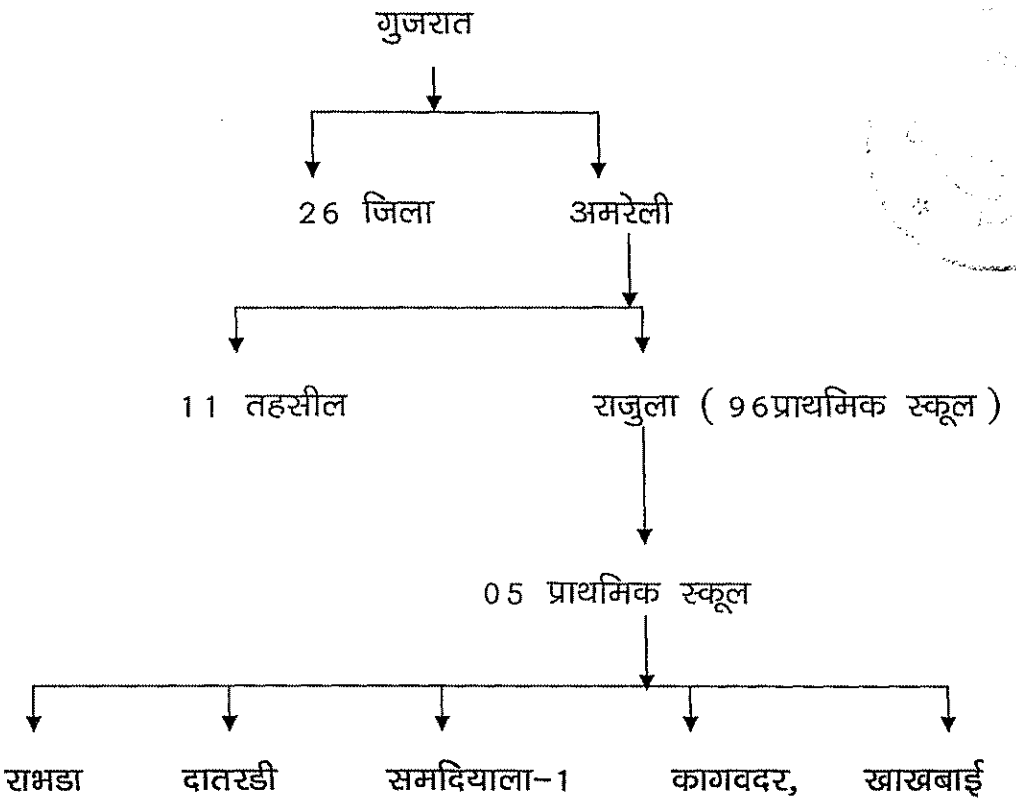

3.3. शोध में प्रयुक्त उपकरण :– (आँकडों का संकलन)

आँकडें एकत्र करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता होती है। सकल अनुसंधान के लिये उपयुक्त यंत्रों एवं उपकरणों का चयन अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपकरणों का विकास तथा कुशलता पूर्वक प्रयोग किये जाने का अपना महत्व है। अतः नये उपकरण का निर्माण अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। ताकि वे उन्हीं का मापन करे जिसके लिये वे निर्मित किये गये हैं।

3.3.1 स्त्रोत (Sources) :-

अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने सर्व प्रथम निम्नलिखित स्त्रोतो का उपयोग करके प्रदत्तों का संकलन किया ।

- विद्यार्थी वार्षिक नामांकन पत्रक
- मध्याह्न भोजन लेने वाले विद्यार्थिओं (लाभार्थी) का हाजरी पत्रक।
- मध्याह्न भोजन संबंधित विविध परिपत्र इत्यादि।

3.3.2 साक्षात्कार/अवलोकन अनुसूची :-

इसके साथ शोधकर्ता ने साक्षात्कार/अवलोकन करने के लिए आंशिक संरचित साक्षात्कार/ अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया, जिसमे प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों से मिलकर, मध्याह्न भोजन लेने वाले छात्रों, मध्याह्न भोजन को बनाने वाले संचालक तथा मध्याह्न भोजन योजना के निगरानी करने वाले विविध सदस्यों का साक्षात्कार/ अवलोकन करके प्रदत्त संकलन किया गया।

3.3.3 शोध उपकरण का प्रयोग :-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने अपने शोध के प्रदत्तों का संकलन करने के लिए पांच प्राथमिक स्कूलों को लिया गया है। इसमें एक स्कूल में दो दिन जाकर प्राचार्य से मिलकर विद्यार्थी बार्षिक नामांकन (1995-2009) लिया गया हैं। तथा उनका साक्षात्कार किया गया।

इसके साथ आंशिक संरचित साक्षात्कार अनुसूची/ अवलोकन का प्रयोग करके मध्याह्न भोजन लेने का निर्धारित समय पर जाकर खाना देखा तथा विद्यार्थीओं से साक्षात्कार किया गया। दूसरे दिन मध्याह्न भोजन को बनाने वाले संचालक, योजना की निगरानी करने वाले विविध सदस्यों तथा विद्यार्थी (लाभार्थी) के अभिभावकों को मिलकर साक्षात्कार किया गया।

3.4 प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने शोध अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण तीन स्तर में किया गया।

1. नामांकन में वृद्धि है या नहीं
2. बच्चों को मेनू के आधार पर पोषणयुक्त आहार मिल रहा है या नहीं।
3. सभी जाति एवं धर्म के छात्र-छात्राओं को लिंग, सामाजिक भेदभाव के बिना एक स्थान पर भोजन उपलब्ध हो रहा है क्या?

उपरोक्त तीन स्तर में से प्रथम में प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थी वार्षिक नामांकन (1995-2009) लिया गया है। दुसरे में आंशिक सरचित साक्षात्कार/ अवलोकन अनुसूची का प्रयोग करके छात्रों का साक्षात्कार किया गया है तीसरे विधान में मध्याह्न भोजन लेने वाले छात्रों का साक्षात्कार करके प्रदतो का संकलन किया गया।

3.5. प्राप्त प्रदत्तों का चित्रमय (ग्राफ) प्रदर्शन :-

प्रस्तुत शोधकार्य में प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थी वार्षिक नामांकन को लिंग एवं विविध जाति के आधार पर सर्व प्रथम नामांकन की तालिका बनाकर उसके बाद ग्राफ के आधार पर दर्शाया गया है जिसमें 1995 से 2009 तक के वर्ष के आधार पर नामांकन को स्तम्भ एवं रेखा के द्वारा बताया गया है।

इस प्रकार इस प्रकरण में प्रदत्त संकलन प्रक्रिया और प्रदत्त विश्लेषण पद्धति के बारे में जाना अब अगले अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है।